Indian Political Thoughts

* MJC - 18] — UG → Sem - VI
* MJC - 15] → Sem - VII

* Political Thoughts (राजनीतिक चिन्तन)

→ राज्य पर चिन्तन जैसे :-

1. → राज्य एवं उसके संस्थानों का सामाजिक जगत से क्या संबंध है।
2. → राज्य का प्रादुर्भाव कब और क्यों हुआ
3. → राज्य का स्वरूप और इसकी उपयोगिता क्या है?
4. → राज्य का लक्ष्य व कार्यक्षेत्र क्या और कहाँ तक है
5. → राज्य की प्रभुता का स्वरूप कैसा है आदि प्रश्नों पर शताब्दियों से चिंतन होता रहा है और वर्तमान में भी हो रहा है। राज्य संबंधी इन सभी मौलिक प्रश्नों पर विचार-विमर्श करना ही रा. चिन्तन है।

* प्राचीन भारतीय राजनीति-चिंतन

भारतीय राजनीति-चिंतन की परंपरा पश्चिमी राजनीति-चिंतन के आरंभ से भी ज्यादा प्राचीन है। भारत में राजतंत्रीय और गणतंत्रीय शासन प्रणालियाँ प्राचीन यूनानी नगर-राज्यों की शासन प्रणालियों से भी पहले विकसित हो चुकी थी। भारतीय मनीषियों ने प्राचीन यूनान

के महान् राजनीति-दार्शनिकों - सुकरात, प्लेटो, और अरस्तू से भी पहले राज्यशास्त्र और शासन-कला पर बहुत सुलझे हुए विचार प्रस्तुत कर दिए थे।

प्राचीन भारतीय राजनीति-चिंतन

को साधारणतः हिंदू राजनीति-चिंतन की संज्ञा दी जाती है। इसकी परंपरा वैदिक युग से आरंभ होती है जो मोटे तौर पर दो सहस्राब्दी ईसा पूर्व का समय था। यह परंपरा चौदहवीं शताब्दी ईसवी तक अर्थात तब तक चलती रही जब यहां मुस्लिम शासन पूरी तरह स्थापित हो गया।

मनु को प्रथम राजनीतिक चिन्तक माना गया है। जिन्होंने मनुस्मृति ग्रन्थ की रचना की। मनु के अलावा प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन में और कई महत्वपूर्ण लोगों का योगदान रहा जिनमें - शुक्र, कौटिल्य, भीष्म जैसे अनेक व्यक्तित्व शामिल हैं। प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन में धर्म और राजनीति को एक साथ जोड़कर देखा जाता था।

* प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन की प्रमुख विशेषताएँ :-

- → आध्यात्मिकता पर बल :- Inclination toward Spirituality
- → राज्य आवश्यक संस्था है
- → राजतंत्र की प्रधानता - Predominance of Monarchy
- → राजनीतिक संगठन और राज्यशिल्प :- Political Organization & Statecraft
- → राजा के कार्यों का वर्णन : Function of the ~~State~~ King.
- → दण्ड पर बल - Conceptions of State Power, Danda -
- → प्रजा को विद्रोह का अधिकार